प्रातः क्लास 31/12/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। जब से बाप बना है तब से टीचर भी है, तब से गुरू के रूप में शिक्षा भी दे रहे हैं। यह तो बच्चे समझते नहीं हैं। जबकि यह बाप, टीचर, गुरू है तो छोटा बच्चा तो नहीं हैं ना। ऊँच ते ऊँच, बड़े ते बड़ा है। वह बाप जानते हैं यह सभी मेरे बच्चे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार पुकारा भी है कि आकर के हमको पावन दुनिया में ले चलो; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। अभी तुम समझते हो पावन दुनिया सतयुग को, पतित दुनिया कलियुग को कहा जाता है। कहते भी हैं आकर के हमको रावण के जेल से लिवरेट कर दुःखों से छुड़ाकर अपने शान्तिधाम, सुखधाम ले चलो। नाम दोनो अच्छे हैं, मुक्ति–जीवनमुक्ति वा शान्तिधाम–सुखधाम। सिवाय तुम बच्चों के और किसकी बुद्धि में नहीं है कि शांतिधाम कहाँ, सुखधाम कहाँ होता है। बिलकुल ही बेसमझ हैं। तुम्हारी एमऑबजेक्ट ही समझदार बनने की है। बसमझों के लिये एमऑबजेक्ट होती है कि ऐसा समझदार बनना है। सभी को सिखाना है यह है एमऑब्जेक्ट। मनुष्य से देवता बनना है। यह है ही मनुष्यों की सृष्टि। वह है देवताओं की सृष्टि। सतयुग की है देवताओं की सृष्टि। तो जरूर मनुष्यों की सृष्टि कलियुग में होगी ना। अभी मनुष्य से देवता बनना है तो जरूर पुरूषोत्तम संगमयुग भी होगा। वह हैं देवताएं, यह हैं मनुष्य। यहाँ सभी बेसमझ मनुष्य हैं। देवताएं हैं समझदार; परन्तु मनुष्य अपन को बेसमझ समझते नहीं हैं। बाप बैठ समझाते हैं रावण तुमको कितना बेसमझ बनाती है। फिर बाप आकर समझदार बनाते हैं। बाप जो विश्व का मालिक है, भल मालिक बनता नहीं हैं; परन्तु गाया तो जाता है ना। बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। बेहद का सुख होता ही है नई दुनिया में और बेहद का दुःख होता है पुरानी दुनिया में। देवताओं के चित्र भी तुम्हारे सामने हैं। उन्हों का गायन भी है। आजकल तो मनुष्य 5 भूतों को भी पूजते रहते हैं। अभी बाप तुमको समझाते हैं तुम हो पुरूषोत्तम संगमयुग पर। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। हमारी एक टांग स्वर्ग में एक टांग नर्क में है। रहे तो वहाँ पड़े हैं, परन्तु बुद्धि नई दुनिया में है और जो नई दुनिया में ले जाते हैं उनको याद करना है। बाप की याद से ही तुम पवित्र बनते हो। यह शिवबाबा बैठ समझाते हैं। शिवजयन्ती मनाते तो जरूर हैं; परन्तु शिवबाबा कब आया, क्या आकर किया, कुछ भी पता नहीं है। शिवरात्रि मनाते हैं। शिव की रात्रि मनाते हैं और कृष्ण की जयन्ती मनाते हैं। वही अक्षर जो कृष्ण के लिये कहते वही शिव के लिये तो नहीं कहेंगे। इसलिये उनकी फिर शिवरात्रि कहते हैं। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। तुम बच्चों को तो अर्थ समझाया जाता है। भक्तिमार्ग की रात्रि, ज्ञानमार्ग का दिन है। भक्तिमार्ग को घोर अंधियारा कहा जाता है; परन्तु यह तो और कोई समझते नहीं हैं। घोर अंधियारा क्यों है? क्योंकि बहुत भटकना पड़ता है। अथाह दुःख है। अथाह दुःखों और अथाह सुखों का वर्णन भी जरूर संगम पर ही होगा ...। अथाह दुःख हैं कलियुग के अन्त में। फिर अथाह सुख होते हैं सतयुग में। यह तुम बच्चों को अभी ज्ञान है। तुम आदि–मध्य–अन्त को जानते हो। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है वह अब पढ़ेंगे। जिसने जो पुरूषार्थ किया है ...ही करेंगे और ऐसा ही पद पावेंगे। तुम्हारी बुद्धि में पूरा चक्र है। तुम्ही ऊँच ते ऊँच पद पाते हो, फिर तुम उतरते भी ऐसे हो। बाप ने समझाया है यह जो भी मनुष्यों की आत्माएं हैं, माला है ना। सभी नम्बरवार आते हैं। हरेक एक्टर्स को अपना2 पार्ट मिला हुआ होता है। किस समय किसका क्या पार्ट बजाना है यह अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो बाप बैठ समझाते हैं। अभी जो तुमको बाप समझाते हैं वह अपने भाईयों को समझाना है। तुम्हारी बुद्धि में है हर 5000वर्ष बाद बाप आकर हमको समझाते हैं। हम फिर भाईयों को समझाते हैं। भाई–भाई आत्मा के सम्बन्ध में है। बाप कहते हैं इस समय में तुम अपन को अशरीरी आत्मा समझो। आत्मा को ही अपने बाप को याद करना है पावन बनने लिये। आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। आत्मा अपवित्र तो जेवर भी अपवित्र। नम्बरवार तो होते ही हैं। एक न मिले दूसरे से। नम्बरवार तो होते हैं। फीचर्स एक्टिविटी एक न मिले दूसरे से। नम्बरवार ही सभी अपना2 पार्ट बजाते हैं। फर्क नहीं पड़ सकता। नाटक में वही सीन

देखेंगे जो कल देखी होगी। वही रिपीट होगी। यह फिर बेहद का और कल का ड्रामा है। कल तुमको समझाया था, तुमने राजाई ली फिर राजाई गवाई। आज फिर समझ रहे हो राजाई पाने लिये। आज भारत पुराना नर्क है, कल नया स्वर्ग होगा। तुम्हारी बुद्धि में है अभी हम स्वर्ग नई दुनिया में जा रहे हैं। श्रीमत पर श्रेष्ठ बन रहे हैं। श्रेष्ठ जरूर श्रेष्ठ सृष्टि पर ही रहेंगे। यह ल0ना0 श्रेष्ठ हैं तो श्रेष्ठ स्वर्ग में ही रहते हैं। भ्रष्ट नर्क में रहते हैं। यह राज़ तुम अभी समझते हो। इस बेहद के ड्रामा को कोई भी अच्छी रीति समझे तब बुद्धि में बैठे। शिवरात्रि भी मनाते हैं; परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। तो अभी तुम बच्चों को रिफ्रेश करना होता है। हर 12मास बाद आपस में मिल रिफ्रेश होते हो, औरो को भी रिफ्रेश करते हो। सन्यासी आदि कोई भी यह नहीं जानते। बाप आये हैं तो क्या करके गये। ल0ना0 के लिये कहेंगे राज्य करके गये। परन्तु कब? राधे–कृष्ण का ल0ना0 से क्या सम्बन्ध है। कुछ भी पता नहीं। जैसे कि कुछ जानते ही नहीं। ऐसे भी नहीं कि (इन)में कोई ज्ञान है। नहीं। ज्ञान से यह सद्गति पाये हुये हैं। फिर ज्ञान की दरकार की ही नहीं। अभी तुमको ज्ञान मिल रहा है, फिर सद्गति को पा लेंगे। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग में नहीं आता हूँ। मेरा पार्ट ही है पतित दुनिया को बदल पावन दुनिया बनाना। वहाँ तो तुम्हारे पास कारून के खजाने होते हैं। यहाँ तो कंगाल हो। इसलिए बाप को बुलाते हो आकर बेहद का वा वर्सा दो। कल्प–कल्प बेहद का वर्सा मिलता है। फिर कंगाल भी हो भी हो जाते हैं। चित्रों पर बैठ समझाओ। तब समझ सकें। पहले नम्बर में ल0ना0 84जन्म लेते2 मनुष्य बन गये हैं। यह ज्ञान अभी तुम बच्चों को मिला है। तुम जानते हो आज से 5000वर्ष पहले आदि सनातन देवी–देवता धर्म था। जिसको वैकुण्ठ पैराडाइज़ डिटी वर्ल्ड भी कहते हैं।अभी तो नहीं कहेंगे। अभी तो डेविल वर्ल्ड है। डेविल वर्ल्ड की एन्ड, डिटी वर्ल्ड की आदि का अभी संगम है। यह बातें अभी तुम समझते हो और कोई के मुख से सुन न सको। बाप ही आकर इनका मुख लेते हैं। मुख किसका लेंगे। समझते नहीं हैं बाप की सवारी किस पर होगी। तुम्हारी आत्मा की सवारी इस शरीर पर होती है ना। बाबा को अपनी सवारी तो है नहीं। तो उनको मुख जरूर चाहिए, नहीं तो राजयोग कैसे सिखावे। प्रेरणा से तो कोई नहीं सीखेंगे। तो यह सभी बातें दिल में नोट करनी हैं। परमात्मा की भी बुद्धि में सारी नॉलेज है। तुम्हारी बुद्धि में भी सारी नॉलेज बैठनी चाहिए। हर नॉलेज बुद्धि ही धारण करती है। कहा भी जाता है तुम्हारी बुद्धि ठीक नहीं हैं। पत्थर बुद्धि तो नहीं हो। बुद्धि आत्मा में रहती है। आत्मा ही बुद्धि साथ समझ रही है। तुम्हारी पत्थर बुद्धि किसने बनाई? अभी समझते हो रावण ने हमारी बुद्धि बना दी है। कल तुम ड्रामा को नहीं जानते थे। पत्थर बुद्धि थे। बुद्धि को एकदम गॉडरेज का ताला लगा हुआ था। गॉड अक्षर तो आता है ना। बाप जो बुद्धि देते हैं वह बदल कर पत्थर बुद्धि हो जाती है। फिर बाप आकर ताला खोलते हैं। सभी हैं पत्थर बुद्धि। सतयुग में हाते ही हैं पारस बुद्धि। तो बाप आकर सभी का कल्याण करते हैं। नम्बरवार सभी की बुद्धि खुलती है। फिर एक/दो के पीछे आते रहते हैं। द्वापर में तो कोई रह न सके। पतित वहाँ रह न सके। बाप पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाते हैं। वहाँ सभी पावन आत्माएं रहती हैं। वह है निराकारी सृष्टि। तुम बच्चों को अभी मालूम पड़ा है तो अपना घर भी जैसे बिलकुल नजदीक दिखाई पड़ता है। तुम्हारा घर से बहुत प्यार है तुम्हारे जैसा प्यार तो और कोई का है नहीं। तुम्हारे में भी सभी नम्बरवार हैं। जिसका बाप के साथ लव है उनका घर के साथ भी लव है। मुरब्बी बच्चे होते हैं ना। तुम समझते हो वहाँ तो अच्छी रीति पुरूषार्थ कर मुरब्बी बच्चा बनेंगे, वही ऊँच पद पावेंगे। छोटा वा बड़ा शरीर के ऊपर नहीं होता है। ज्ञान और योग में जो मस्त हैं वह बड़े हैं। कई छोटे2 यह ज्ञान, योग में तीखे हैं तो बड़ों को भी पढ़ाते हैं, नहीं तो कायदा है बड़े, छोटों को पढ़ाते हैं। आजकल तो मिडगेट भी हो जाते हैं। यूँ तो सभी आत्माएं मिडिगेट हैं। आत्मा बिन्दी है उनका क्या वर्णन करें। सितारा है। मनुष्य लोग सितारा नाम सुनकर ऊपर में देखेंगे। धरती के सितारे तुम हो। वह हैं आसमान के। वह जड़ तुम चैतन्य। उनमें तो फेर–गेर होती नहीं है। तुम तो 84जन्म लेते हो। कितना पार्ट बजाते हो। वह तो जड़ है। तुम 84जन्मों का पार्ट बजाते हो।

पार्ट बजाते2 चमक डल हो जाती है। बैटरी डिसचार्ज हो जाती है। फिर बाप आकर भिन्न2 प्रकार से समझाते हैं। क्योंकि तुम्हारी आत्मा डल हो गई है। जो ताकत भरी थी वह खलास हो गई है। अभी फिर बाप द्वारा ताकत भरते हो। तुम अपनी बैटरी चार्ज कर रहे हो। उसमें माया भी बहुत विघ्न डालती है। बैटरी चार्ज करने नहीं देती है। तुम चैतन्य बैटरियां हो। जानते हो बाप के साथ योग लगाने से हम सतोप्रधान बनेंगे। अभी तमोप्रधान बने हैं। कोई भी सतोप्रधान तक बैटरी चार्ज नहीं कर सकते हैं। तो फिर सजाएं खाते हैं। पद भी भ्रष्ट हो जाता है। फर्क कितना है, उस हद की पढ़ाई और बेहद की पढ़ाई में। कैसे नम्बरवार सभी आत्माएं ऊपर से आती हैं। फिर अपने2 समय पर अपना–2 पार्ट बजाने आना है। सभी को अपना अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। तुमने यह 84 का पार्ट कितना बार बजाया होगा। तुम्हारी बैटरी कितना बारी चार्ज हुई है और डिस(चार्ज) हुई है। जब जानते हो हमारी बैटरी डिसचार्ज है तो फिर चार्ज करने में देरी क्यों करनी चाहिए; परंतु माया बैटरी चार्ज करने नहीं देती है। माया बैटरी चार्ज करना तुमको भुला देती है। तुम्हारी बैटरी डिसचार्ज करा देती है। कोशिश करते हो बाप को याद करने; परंतु नहीं कर सकते हो। जो चार्ज कर सतोप्रधान तक नज़दीक जाते हैं उनको भी फिर डिसचार्ज कर देगी। जितना बड़ा महारथी अपन को सेफ न समझे। थोड़ी भी गफलत करने से माया झट बैटरी डिसचार्ज कर देती है। यह पिछाड़ी तक होता रहेगा। फिर जब लड़ाई की अन्त होगी तो सभी खत्म हो जाती है। तो जिसकी जितनी बैटरी चार्ज हुई उस अनुसार पद पावेंगे। सभी आत्माएं बाप के बच्चे हैं। बाप ही आकर सभी की बैटरी चार्ज कराते हैं नम्बरवार। फिर कोई सजा भी खाते हैं। खेल देखो कैसा वन्डरफुल बना हुआ है। बाप के साथ योग लगाने से घड़ी2 हट जाते हैं। तो कितना नुकसान हो जाता है। न हटे उसके लिये परूषार्थ कराया जाता है। पुरू॰ करते2 जब समाप्ती होती है तो फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम्हारा पार्ट पूरा होता है जैसे2 कल्प होता है। आत्माओं की माला बनती रहती है रूद्राक्ष की भी माला है। विष्णु की माला भी ऐसे ही समझो। पहले नम्बर में तो उनकी माला रखेंगे ना। बाप दैवी दुनिया रचते हैं ना। फिर पीछे आसुरी बनती है। जैसे रूद्रमाला है वैसे रुण्डमाला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बन सकती है। बदली–सदली होती रहती है। फाइनल तब होगी जब रूद्रमाला बनेगी। यूँ ब्राह्मणों की भी माला है; परन्तु इस समय नहीं बन सकती है। वास्तव में प्रजापिता ब्रह्मा के सभी सन्तान हैं ना। शिवबाबा की सन्तान की भी माला है। ब्रह्मा की भी माला है। विष्णु की भी माला कहेंगे। तुम ब्राह्मण बनते हो तो ब्रह्मा की, शिव की भी माला चाहिए। वह भी प्रजापिता है ना। वह ल0ना0 राजधानी का पिता, वह सच्चा2 मात–पिता ठहरा। यह एडाप्ट करते हैं। तो यह सारा ज्ञान तुम्हारे में नम्बरवार धारण करते हैं। सुनते तो सब हैं; परन्तु कोई का उस समय ही कानों से निकल जाता है, सुनते ही नहीं। कोई तो पढ़ते ही नहीं। उनको पता ही नहीं है भगवान पढ़ाने आये हैं। पढ़ते भी नहीं हैं। यह पढ़ाई तो कितना खुशी से पढ़नी चाहिए। कोई भी विद्वान–पंडित आदि को यह नॉलेज है नहीं। वह ता सब है भक्ति। बहुत भक्ति से क्या होगा? दुर्गति। दुर्गति को पाया है ना। तुम समझाते हो बहुत शा॰ पढ़के दुर्गति को पाया है। क्योंकि परमात्मा की ग्लानि करते हो। पहली ग्लानि, कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी है। मनुष्यों के बनाये हुये शास्त्र पढ़कर, ईश्वर सर्वव्यापी कहकर दुर्गति को पाया है। गीत कैसे कंठ कर लेते हैं। भाईयों को भी गीता कंठ कराते हैं। फिर उनका बहुत मान होता है। अर्थ भी उल्टा–सुल्टा समझाये लेते हैं। तो भी कितना मान होता है। तुम कहेंगे यह तो हिरण्यकश्यप है। नाम ही यह। आजकल तो विद्वानों की जैसे कि राजाई है। उन्हों को सभी माथा टेकते थे। सतयुग, त्रेता में कोई माथा टेकने वाला होता ही नहीं। आगे तो यह पवित्र थे। तब उनको माथा टेकते थे। अभी तो पतित पतित को माथा टेकते हैं। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।